प्रकाशनार्थ 03 मई 2016, प्रभु प्रेमी संघ कुंभ शिविर उज्जैन

।। रास पंचाध्यायी ।।

03 मई, उज्जैन । जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित प्रभु प्रेमी संघ शिविर में श्री कृष्ण की दिव्य लीला पर आधारित रास पंचाध्यायी का श्रीमन्माधवगौड़ेश्वर वैष्णवाचार्य श्री पुंडरिक गोस्वामी जी महाराज ने रससिद्ध विश्लेषण करते हुए कहा कि पंचाध्यायी वैष्णव भक्ति के समर्पण भाव को स्थापित करने वाला यह प्रधान प्रसंग है जिसमें दिव्य कृष्ण लीला के माध्यम से प्रेम और समर्पण की प्रतिष्ठा की गई है। रास लीला काम प्राप्ति पट विजय की लीला है, कृष्ण प्रेम जगाने वाली लीला है, इस लीला का उपास्य काम विजयी माना जाता है जो कोई भक्त भी इस लीला का श्रवण, पठन या दर्शन करता है वह कामजय की सिद्धि प्राप्त करता है। नन्दोंत्सव की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि अजन्मे का जन्म हो गया । भगवान स्वयं अजन्मे है। भगवान सबल होकर भी सरल है । भगवान को देखने की तीन दृष्टियाँ है ब्रह्म स्वरुप, परमात्मा स्वरुप एवं भगवान स्वरुप। जो निर्गुण है उसका भी एक गुण है निर्गुण होना ही उसका प्रमुख गुण है। जो आत्मा का सृजन करता है वह परमात्मा है। जो आप कर सकते है, जो आपका मन कर सकता है और जो आपका मन भी नहीं कर सकता है वह सबकुछ भगवान कर सकते है । सत्य स्वरूप परमात्मा का हम ध्यान करते हैं। सत्य ही परमात्मा है। कपट नहीं है ऐसी निष्कपट चर्चा ही भागवत का मुख्य विषय है। भागवत का मुख्य विषय है निष्काम भक्ति। जहां भोगेच्छा है वहां भक्ति नहीं होती। भगवान के लिए भक्ति करें। भक्ति का फल भगवान होना चाहिए , संसार सुख नहीं। मांगने से प्रेम की धारा टूट जाती है। इसीलिए कृष्ण कह गए हैं कि जो आनंद मुझे गोकुल में गोपियों से मिला है वह द्वारका में नहीं मिला क्योंकि गोपियों का प्रेम निष्काम है। सत्कर्मों में अनेक विघ्न आते हैं। उन सभी के निवारण के लिए मंगलाचरण की आवश्यकता है। जिनका आचरण मंगलमय है, उनका ध्यान धरने से, उन्हें वंदन करने से, उनका स्मरण करने मात्र से मंगलाचरण होता है। मंगलाचरण का मतलब है भगवान को, गुरु को, परंपरा को एवं सभी को प्रणाम हो जाये । गोवर्धन लीला, रास लीला, चीरहरण लीला तीनों लीलाओं में भगवान शब्द का प्रयोग होता है, चीरहरण का आशय वासना के वस्त्र लेकर उपासना के वस्त्र देने से है । सनातन धर्म को आज सेवा की आवश्यकता है जहाँ मन मेवा प्राप्ति से मुक्ति हो जाए वही वास्तविक सेवा है । व्यास पूजन शिविर संरक्षक पुरुषोत्तम अग्रवाल जी द्वारा किया गया। 2 मई से प्रारंभ हुई कथा 6 मई 2016 तक चलेगी समय दोपहर 3 बजे से सायं 6 बजे तक है।

।।पंचमहाभूत- सनातनी राष्ट्रीय विमर्श उज्जैन का समापन।।

जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामण्डलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित प्रभु प्रेमी संघ शिविर में आज त्रिदिवसीय पंचमहाभूत सनातनी राष्ट्रीय विमर्श के समापन सत्र का आयोजन किया गया। 01 मई से प्रारंभ हुए इस राष्ट्रीय विमर्श में 100 से अधिक प्रतिष्ठित पर्यावरणविद, शोध विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ताओं, वैज्ञानिको, कार्पोरेट सेक्टर विशेषज्ञ एवं धर्म विज्ञान विशेषज्ञों द्वारा दृष्टी पत्र का निर्माण एवं पंचमहाभूत संतुलन घोषणा पत्र का अनुमोदन प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए डॉ दिनेश जैन ने बताया कि 12 वर्ष पूर्व सिंहस्थ कुंभ 2004 में जूनापीठाधीश्वर आचार्यमहामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंदगिरि जी महाराज की पावन प्रेरणा से जल संसद आयोजित की गई थी। उसमें पूज्यश्री ने जो संकल्पना दी थी विक्रम विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर राम राजेश मिश्र व उनकी टीम ने प्रतिबद्धता के साथ कार्य करते हुए क्षिप्रा के किनारे बसे ग्रामों में 500 सरोवरो का निर्माण तथा 50000 हज़ार वृक्षों का रोपण और संरक्षण किया। विषय की सनातनी व्याख्या करते हुए पूज्य श्रीपीठाधीश्वर श्री भगवान दास जी ने पंच महाभूत तत्व की समग्रता एवं सृष्टि में सतत विद्यमानता पर प्रकाश डाला। प्रो. राम राजेश मिश्र ने पिछले घोषणापत्र का पालन प्रतिवेदन और नया संकल्प पत्र प्रस्तुत किया।

विमर्श को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री ने कहा कि आप सभी के भगीरथ प्रयासों के कारण यह सिंहस्थ जीवंत, मूर्तिमंत और साकार होता दिखाई दे रहा है। आपके द्वारा किया गया यह प्रयास न केवल क्षिप्रा अपितु पूरे देश के लिए आदर्श प्रस्तुत करेगा। क्षिप्रा ग्लेशियर से निकली नदी नही है। यह तालाबों व वनस्पतियों से जीवन प्राप्त करती है। मेरी ऐसी कामना है कि माँ क्षिप्रा सदा नीरा रहे। आप सब मालवा की संवेदना की रक्षा कर रहे हैं। आचार्यश्री ने इस सारस्वत अनुष्ठान और उसकी नाभिकीय सत्ता बने प्रो. रामराजेश मिश्र जी की भूरि भूरि प्रसंशा भी की।

कार्यक्रम में पूज्य स्वामी चिदानंद जी एवं पूज्या महामंडलेश्वर स्वामी नैसर्गिका गिरि जी ने भी अपना आशीर्वचन प्रदान किया। सभी ने मिलकर क्षिप्रा संरक्षण का संकल्प भी लिया गया । इस अवसर पर प्रो. हरीश व्यास , पं राधेश्याम मिश्र, प्रो देवेन्द्र मोहन कुमावत , प्रो. अल्का व्यास , प्रो. नागेन्द्र शिंदे , प्रो तपन चौरे , आचार्य अभय पाठक , क्रान्ति चतुर्वेदी, प्रो शैलेन्द्र शर्मा, उज्जैन नगरपालिका के चेयरमैन सोनू गहलोत एवं देश भर से आए लगभग 100 से अधिक विविध क्षेत्रों के विद्वान तथा बड़ी संख्या में जनसमूह उपस्थित रहा। इस राष्ट्रीय विमर्श का यह आयोजन मित्र भारत, नव संवत् नव विचार , जल संस्कृति परिषद, विश्व तीर्थ परिषद जैसी सहयोगी संस्थाओ के माध्यम से किया गया।

मीडिया सेल, प्रभु प्रेमी संघ शिविर

उजरखेड़ा, भूखीमाता चौराहे के पास, बड़नगर रोड, उज्जैन